3.3 कृषि के प्रकार (फसल के लिए आर्द्रता के प्रमुख स्रोत के आधार पर)

फसल के लिए आर्द्रता के प्रमुख उपलब्ध स्रोत के आधार पर कृषि को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है :

(1) सिंचित कृषि

(2) वर्षा आधारित (बारानी) कृषि

(1) सिंचित कृषि को भी सिंचाई के उद्देश्य के आधार दो उपवर्गों में विभाजित किया जाता है :

- **रक्षित सिंचाई:** इसका मुख्य उद्देश्य आर्द्रता की कमी के कारण फसलों को नष्ट होने से बचाना है जिसमें वर्षा जल की कमी को सिंचाई द्वारा पूरा किया जाता है।
- **उत्पादक सिंचाई:** इसका उद्देश्य फसलों को पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध कराकर अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करना है। उत्पादक सिंचाई में जल निवेश की मात्रा रक्षित सिंचाई की अपेक्षा अधिक होती है।

(2) वर्षा निर्भर कृषि को कृषि ऋतु में उपलब्ध आर्द्रता की मात्रा के आधार पर दो उपवर्गों में विभाजित किया जाता है :

- **आर्द्र कृषि भूमि:** आर्द्र भूमि कृषि में, वर्षा ऋतु के अंतर्गत वर्षा जल पौधों की जरुरत से अधिक होता है। इन क्षेत्रों में वे फ़सलें उगाई जाती हैं जिन्हें जल की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है, जैसे चावल, जूट और गन्ना आदि।
- **शुष्क भूमि कृषि (dry land agriculture)** : भारत में शुष्क भूमि कृषि मुख्यतः उन प्रदेशों तक सीमित है जहाँ वार्षिक वर्षा 75 cm से कम है। इन क्षेत्रों में शुष्कता को सहने में सक्षम फसलें जैसे रागी, बाजरा, मूंग, चना तथा ग्वार (चारा फसलों) आदि उगाई जाती हैं तथा इन क्षेत्रों में आर्द्रता संरक्षण तथा वर्षा जल के प्रयोग की अनेक विधियाँ अपनाई जाती हैं। शुष्क भूमि कृषि की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:
    - इसमें वर्षा जल संचयन तकनीक का उपयोग किया जाता है। यह दो वर्षा की अवधियों के बीच सूखापन के अंतर को कम करने में मदद करता है।
    - आवश्यकता से अधिक वर्षा की उपलब्धता जल को भूमि के अन्दर रिसने में मदद करती है। इससे जल संरक्षण में मदद मिलती है।
    - शुष्क भूमि खेती के दो मुख्य स्रोत मृदा और जल हैं।
    - यह अधिक समय तक शुष्कता मृदा के क्षरण को बढ़ाती है।
    - मृदा की ऊपरी परत के नष्ट होने के कारण मृदा अनुत्पादक और अनुर्वरक हो जाती है।
    - शुष्क भूमि कृषि मुख्यतः गरीब किसान करते हैं। ये किसान धन की कमी के कारण, सिंचाई और मृदा की उर्वरता में निवेश करने में असमर्थ होते हैं।
    - आय को बढ़ाने के लिए पूरक रूप में पशुपालन किया जाता है।

3.4 फ़सल प्रतिरूप (Cropping pattern)

- फ़सल प्रतिरूप, एक निश्चित क्षेत्र पर फ़सलों के वार्षिक अनुक्रम और स्थानिक व्यवस्था को प्रदर्शित करता है। यदि किसी क्षेत्र के फसल प्रतिरूप में परिवर्तन होता है तो इसका अभिप्राय यह है की विभिन्न फसलों के लिए प्रयोग किये गए क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है।

VISION IAS